आज का पुरुषार्थ, 2 May 2022

From: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"आज से लक्ष्य साधें हमें सभी आकर्षण से मुक्त होकर, सम्पूर्ण बनना है"*

हमें **सम्पूर्ण** बनना है। सम्पूर्णता अर्थात हम जब इस संसार में आये तब हमारी डिग्री हन्ड्रेड थी। हमने यूज़ की अपने **शक्तियों** को। चलते-चलते वह डाउन होकर पाँच सात में आ गई। अब उसे पुनः 100% पर ले जाना यह है **सम्पूर्ण** बनना।

सम्पूर्ण बनने में **पवित्रता** में सम्पूर्ण बनना है, **योग** में भी सम्पूर्ण बनना है। ज्ञान में भी सम्पूर्ण बनना है। कुछ **धारणायें** जीवन में पूरा धारण करना है। तब हममें सम्पूर्णता आयेगी।

बाबा ने बहुत सूक्ष्म बात कही ...

" किसी भी चीज़ का आकर्षण न हो, यह है सम्पूर्ण स्थिति "

बाबा एक उदाहरण दिया करते थे ...

" हलुवा जब तैयार हो जाता है तो कड़ाई के दीवारें छोड़ देता है .. वैसे ही तुम भी जब सभी आकर्षण छोड़ देंगे .. तो बिल्कुल बंधनमुक्त बन जाओगे .. कहीं चिपकेंगे नहीं .. तो यह **सम्पूर्ण स्थिति** कहलायेगी "

तो देखें .. हमे **देह** का आकर्षण होता है? **धन** का आकर्षण है? किसी विशेष **वस्तु** का, वस्त्र क, कारों का, किसी **पद-पोजीशन** का आकर्षण किस चीज की है?

किसी की **गीत संगीत** का? हला की इससे मन प्रसन्न होता है। लेकिन उसके विना रह न पाये? उसके विना मन खुश न हो? जो कि सम्पूर्ण रूप से ग़लत है।

तो हम सभी ध्यान दे कि हर तरह की **आकर्षण से हम मुक्त होते चले।** देह के लिए संकल्प करे ...

" **यह देह तो मिट्टी है** .. और सुन्दरता .. अगर खाल उतार दिया जाये तो .. अंदर गंदगी के अलावा कुछ भी नहीं है .. तो मुझे तो आकर्षित होना है आत्मा की ओर "

आत्मिक दृष्टि रखने से देह का आकर्षण समाप्त हो जायेगा। किसी के गुणों का, पार्सोनालीटि का आकर्षण भी रहता है। लेकिन इसमें भी ध्यान रखना है ...

" **गुण वा पार्सोनालीटि यह प्रभू देन है** .. बहुतों को मिली है .. मुझे उनकी यह बातें अच्छी लगती है तो मुझे अपने को ऐसा बनाना है "

.... यह हम ख्याल रखेंगे।

बाकी जो सब वस्तुएं है, जिन पर मनुष्यों का आकर्षण होता है, उनके लिए ऐसा भाव रख ले कि ...

" यह सब विनाशी है "

किसी को बहुत सुन्दर वस्त्र या **jewelery** पहनने का आकर्षण होता है, उसके सुख-खुशी कितने देर रहेंगी? कुछ देर बाद तो वो नर्माल लगने लगेगा।

तो इन सभी चीजों से अपनी बुद्धि को निकालते चले। लेकिन यह तभी होगा, जब हमें यह ख्याल रहेगा कि ...

" **असली आनन्द ईश्वरीय आनन्द है** ".. उसकी सुखों को पाकर और किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं रहती

आकर्षण हो जाये बाबा से **सर्व खजाने** लेने का। तो यह संसार के आकर्षण स्वतः ही ढीले पड़ जायेंगे, फीके हो जायेंगे।

तो आओ हम सभी अपने **अपने आकर्षणों को चेक करे।** सभी किनारे को छोड़े। कोई भी बंधन हमें अपनी ओर खींचे नहीं।

तो हमारी **स्थिति सम्पूर्ण योगयुक्त हो जायेगी।** हमारी प्योरीटी बढ़ती जायेगी। हमारा मन स्थिर हो जायेगा। और हम अपने इस जीवन का सम्पूर्ण आनन्द ले सकेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org